आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक को काम तथा रोजगार देने की आवश्यकता है। स्वरोजगार को बढ़ावा देने की जरूरत है। आज के ''एज ऑफ कमनमैन'' के युग में प्रत्येक व्यक्ति के महत्त्व को समझना होगा। भारत में कुटीर उद्योगों को विकसित करना होगा। महिला सशिक्तकरण को प्रोत्साहित करना होगा। आयात से कहीं अधिक निर्यात पर ध्यान देना होगा।

प्रो. अच्युत सामंत की दृष्टि में 'आत्मनिर्भर भारत' की शाश्वत अवधारणा : एक अनुचिंतन

राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रतापी पुत्र 'भरत' के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है जिसे आज भारत तथा इण्डिया के नाम से जाना जाता है। भगवान राम, कृष्ण, गौतम तथा गांधी यहीं पर अवतरित हुए। यह महान भारतवर्ष देश प्राचीन ऋषि-मुनियों का देश रहा है। आज भी यहां पर लगभग ७५ लाख साधु-संत-महात्मा आदि रहते हैं। आध्यात्मिक जीवन यापन करते हुए आत्मनिर्भर बनकर हमें आत्मनिर्भर भारत का पावन संदेश देते हैं। रामायण तथा महाभारतकालीन समय में भी यहां पर मानव तथा प्रकृति के अटूट साहचर्य का उल्लेख मिलता है। गुरुकुल की परम्परा भी हमें आत्मनिर्भर बनने तथा आध्यात्मिक जीवन की प्ररेणा देती है। सत्यनारायण-सेवा तथा दरिद्रनारायण-सेवा को भारतवासियों ने अपने आत्मनिर्भर भारत का यथार्थ आदर्श बनाया है। भारत की सबसे बड़ी समस्या आज है- भारतीय समाज के शोषित, उपेक्षित, वंचित, दलित, लाचार और जरुरतमंद लोगों के प्रति हमसब की असंवेदनशीलता। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रम में राष्ट्रनिर्माता गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने ग्राम विकास की बात कही थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए गांवों के सर्वांगीण विकास की बात कही है। इसीलिए आधुनिक भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए भारत के गांवों को सभी प्रकार से आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता है। यह जिम्मेदारी व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रूपों में अपनाने की जरुरत है।

विगत १६ मार्च, २०२० से लेकर ३१ अक्तूबर,२०२० तक मैंने भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस के संस्थापक तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रोफेसर अच्युत सामंत के सानिध्य में रहकर बहुत कुछ सीखा। एक तरफ जहां पूरा भारत वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण के त्रस्त होकर डरकर अपने-अपने घरों में कैद था, वहीं प्रो अच्युत सामंत अपनी जान की परवाह किये बिना ओडिशा के जरुरमंद लोगों, साधु-संतों-महात्माओं, कोरोना योद्धाओं तथा आवारा पशुओं आदि को अपनी ओर से भोजन तैयार कर उनतक पहुंचाने में दिन-रात लगे हुए नजर आये वहीं अपने आत्मविश्वास को कायम रखकर अपने चेहरे पर मुसकराहट सदैव बनाये नजर आये। मैंने यह अनुभव किया कि कोरोना संक्रमण के दौरान पिछले लगभग सात महीनों के दौरान प्रो अच्युत सामंत ने जिस प्रकार की निःस्वार्थ जनसेवा और लोकसेवा की है वह सचमुच अनुकरणीय, वंदनीय और ओडिशा समेत पूरे भारत के सभी जननायकों तथा जनसेवकों के लिए यथार्थ रुप में आदर्श जनसेवा का

उनके अनुसार भारत की आत्मा गांवों में बसती है। इसलिए भारत के गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की आज आवश्यकता है। उनके अनुसार सबसे पहले गांवों के सर्वांगीण विकास से जुड़ी समस्त सरकारी परियोजनाओं को सही तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। प्रो सामंत के अनुसार 'भारत' और 'इण्डिया' की अवधारणा आत्मनिर्भर भारत को साकार करने में कारगर सिद्ध होगी। ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, कौशल विकास तथा सूचना तकनीक आदि के लिए इण्डिया की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता है वहीं कृषि, स्वास्थ, शिक्षा, रोजगार के लिए भारत की अवधारणा को अपनाने की जरूरत है। खादीग्रामोद्योग, स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण तथा उनके उपयोग की आज जरूरत है। हमसब को आज अपनी पाश्चात्य के चकाचौंध की मानसिकता को बदलने की सख्त आवश्यकता है।

जीवंत उदाहरण रहा है। उस दौरान प्रो अच्युत सामंत ने ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायकजी और उनकी सरकार के साथ मिलकर उनके दिशानिर्देश पर ओडिशा में ४-४ कोविद-१९ अस्पताल खोले। अपनी मेडिकल संस्था कीम्स की ओर से उन अस्पतालों में अनुभवी डाक्टरों, नर्सों तथा पारामेडिकल स्टाफों की तैनाती की। हर प्रकार का मेडिकल संसाधन आदि उपलब्ध करवाया। सबसे बड़ी बात तो मैंने यह देखी कि उनके द्वारा स्थापित विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय ''कीस'' के लगभग ३० हजार आदिवासी बच्चों को मार्च, २०२० से लेकर ३१ अक्तूबर,२०२० तक उनके गृहगांवों में बच्चों के लिए सूखी खाद्य सामग्री से लेकर सूखा फल तथा उन बच्चों के लिए पाठ्य-पुस्तकों संग अन्य पठन-पाठन संसाधन आदि भी अपनी ओर से नियमित रुप से उपलब्ध कराई। कीस के उन आदिवासी बच्चों को उत्कृष्ट तालीम में किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो उसके लिए उन्होंने अपने द्वारा स्थापित कलिंग ओडिया क्षेत्रीय टेलीविजन चैनल से प्रतिदिन एक-एक घण्टे के लिए सभी विषयों पर क़्लास का सीधा प्रसारण कराया जो आज भी प्रतिदिन प्रसारित हो रहा है। प्रो अच्युत सामंत ने बताया कि कोरोना संक्रमण के वक्त भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी भारत के आत्मनिर्भर भारत के लिए लोकल के लिए वोकल बनने की बात कही। स्वदेशी जनजागरण का नारा बुलन्द किया वहीं प्रो अच्युत सामंत ने अपने आत्मनिर्भर विचारों को लेकर प्रसन्न नजर आये। और यह सच भी है कि प्रो अच्युत सामंत का अब तक का पूरा जीवन आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देता है। प्रो अच्युत सामंत ने बताया कि १९९२-९३ से ही वे कीट-कीस की स्थापनाकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सतत अग्रसर हैं। उनके द्वारा स्थापित तकनीकी उच्च शिक्षा संस्थान कीट डीम्ड विश्वविद्यालय एक तरफ जहां अगर कारपोरेट है तो कीस डीम्ड विश्वविद्यालय उसका सामाजिक दायित्व का प्रत्यक्ष उदाहरण। सच तो यह है कि कीस आज विश्व का सबसे बड़ा आदिवासी आवासीय विद्यालय ही नहीं है अपितु विश्व का प्रथम डीम्ड आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय भी बन चुका है जहां पर तीस हजार से भी अधिक आदिवासी बच्चे केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त करते हैं। कीस के बच्चों को नियमित औपचारिक शिक्षण के साथ-साथ कुल २५ प्रकार के वोकशनल प्रशिक्षण आदि भी निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रो सामंत ने बताया कि आनेवाले दिनों में वे आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को साकार करने की दिशा में अग्रसर हैं जिसके तहत उनके द्वारा स्थापित कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भी आनेवाले दिनों में आत्मनिर्भर बनेगा। 'सादा जीवनःउच्च विचार' के धनी प्रो अच्युत सामंत का कहना है कि जिस प्रकार उन्होंने अपने पैतृक गांव कलराबंक को उन्होंने अपनी ओर से स्मार्ट गांव बना दिया है, उसी प्रकार भारत के सभी निःस्वार्थी जननायकों तथा जनसेवकगण को भी सबसे पहले अपने-अपने गांवों को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। *उनके अनुसार भारत की आत्मा गांवों में बसती है। इसलिए भारत के गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की आज आवश्यकता है। उनके अनुसार सबसे पहले गांवों के सर्वांगीण विकास से जुड़ी समस्त सरकारी परियोजनाओं को सही तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। प्रो सामंत के अनुसार 'भारत' और 'इण्डिया' की अवधारणा आत्मनिर्भर भारत को साकार करने में कारगर सिद्ध होगी। ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, कौशल विकास तथा सूचना तकनीक आदि के लिए इण्डिया की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता है वहीं कृषि, स्वास्थ, शिक्षा, रोजगार के लिए भारत की अवधारणा को अपनाने की जरूरत है। खादीग्रामोद्योग, स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण तथा उनके उपयोग की आज जरूरत है। हमसब को आज अपनी पाश्चात्य के चकाचौंध की मानसिकता को बदलने की सख्त आवश्यकता है।* आत्मनिर्भर भारत तैयार करने के लिए विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की जरूरत है। प्रत्येक भारतीय और उसके योगदानों को समग्रता में देखने की आवश्यकता है। ईश्वर की सत्ता में पूर्णरुपेण विश्वास रखने की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता तथा भौतिकता को साथ-साथ अपनाने की आवश्यकता है। प्रो सामंत के अनुसार भारतवर्ष तथा हमारे भारतीय समाज को ठीक उसी प्रकार देखने की जरूरत है जैसा कि मानव शरीर में मन और आत्मा है। आदर्श भारतीय समाज की हिफाजत करना प्रत्येक भारतीय का पावन दायित्व है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक को काम तथा रोजगार देने की आवश्यकता है। स्वरोजगार को बढ़ावा देने की जरूरत है। आज के ''एज ऑफ कमनमैन'' के युग में प्रत्येक व्यक्ति के महत्त्व को समझना होगा। भारत में कुटीर उद्योगों को विकसित करना होगा। महिला सशिक्तकरण को प्रोत्साहित करना होगा। आयात से कहीं अधिक निर्यात पर ध्यान देना होगा।

अपना हाथः जगन्नाथ तथा आप सुखी तो जग सुखी के मूल सिद्धांत को अपनाना होगा। मेरे अनुचिंतन के अनुसार कीट-कीस के संस्थापक तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रोफेसर अच्युत सामंत स्वयं में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को साकार करने की दिशा में प्रेरणास्त्रोत हैं। ■

प्रस्तुतिः अशोक पाण्डेय